435

I

ALL INDIA ESSAY WRITING EVENT - 2013

Organized by

Shri Ram Chandra Mission

in collaboration with the

United Nations Information Center for India and Bhutan

PARTICIPANT INFORMATION SLIP

[to be filled in BLOCK LETTERS, signed by the participant and securely attached to the essay]

Serial No.: RAJ/C2/HIN/ 00159
(For official use only)

Student Name : ANKUR CHAKRAVARTY
प्रतिभागी का नाम

Father's Name : Dr. MANOSH CHAKRAVARTY
पिता का नाम

Date of Birth (dd-mm-yyyy) : 13.10.1989 Standard : PGDM 2012-14
जन्म तिथि (दिन-माह-वर्ष) कक्षा

Full Name of School/ College : JAIPURIA INSTT. OF MGMT., JAIPUR
विद्यालय / कॉलेज का पूरा नाम
(Jaipuria Institute of Management, Jaipur - 302-033)

City/ Town : JAIPUR State : RAJASTHAN Phone : 9772521008
शहर / कस्बा राज्य दूरभाष

e-mail ID : cankurc@rediffmail.com Mobile : 9772521008
ई-मेल मोबाईल

Category : 1. - Class 9 to 12 ☐ 2. - (UG and PG) ☑ Language tick ☑ : HIN ☑ ENG TEL
श्रेणी : 1 - कक्षा 9 से 12 2 - स्नातक और परास्नातक भाषा चुनाव करें ☑ : हिन्दी अंग्रेजी तेलगु

Topic : Select Category wise topic from given below ☑ :
विषय : निम्न में से श्रेणी के अनुसार विषय का चुनाव करें ☑ :

☐ **Category 1 (Class 9 to 12)**
Minds are opened only when hearts are opened.
मन तभी खुल सकते हैं जब दिल खुलते हैं।

☑ **Category 2 (UG and PG)**
Its not what you look at that matters, but what you see. - H.D.Thoreau
आप जिस पर नज़र डालते हैं उसका उतना महत्व नहीं हैं जितना कि उसका जिसे आप वाकई देखते हैं। – हेनरी डेविड थोरो

Through the submission of the Essay, the author grants and assigns all proprietary rights (including copy-rights) to Shri Ram Chandra Mission. The assignment shall be deemed to be royalty-free, perpetual, worldwide and irrevocable. Shri Ram Chandra Mission may sublicense its rights through multiple tiers of sublicenses and may use, reproduce, create derivative works from, modify, publish, edit, translate, distribute, perform and display the communication or content in any media or medium, or any from, format or forum now known or hereafter developed.

I hereby declare that I am the sole person who has written this essay. Though I am encouraged to discuss the topic with others, I hereby agree to give credit to the ideas obtained from others or any reference material.

Signature of Participant : Ankur Chakravarty

Bleed for Binding/ Pasting/ Stapling of Participant Information Slip etc. will not be include as printable area.

Ankur Chakravarty
Jaipuria Institute of Mgmt.,
Jaipur (2nd year)

It is not what you look at that matter but what you see...
— H. D. Thoreau

'बन्द आँखों के अन्धकार के पीछे क्या है?' इस परम सत्य की खोज प्राचीन काल से ही भारतीय संस्कृति की विशेषता रही है।

मनुष्य ईश्वर की सभी रचनाओं में सर्वश्रेष्ठ है क्योंकि उसके पास दो दृष्टियाँ हैं – एक बाह्य दृष्टि या स्थूल दृष्टि तथा दूसरी अर्न्तदृष्टि या सुक्ष्म दृष्टि। हमारी स्थूल दृष्टि जो देखती है, जैसा हम सोचते हैं, जैसी हमारी भावनाएँ हैं बस हमारा संसार भी वैसा ही हो जाता है, उस संसार के दायरे से बाहर हम सोच-समझ नहीं पाते। हमारे जीवन की अनगिनत समस्याओं का कारण हमारी हमारी स्थूल या संकीर्ण दृष्टि होती है जिस कारण हम प्रकृति व जीवन को समझ नहीं पाते। सामान्यतः हम किसी भी व्यक्ति, घटना या वस्तु के स्थूल आवरण को देखते हैं, इन स्थूल आवरणों से व्यक्ति या वस्तु की जो पहचान होती है वह अस्थाई होती है, स्थाई होती है उसके अन्दर की अन्तर्दृष्टि या अर्न्तज्ञान या अन्तः चेतना या अर्न्तदर्शन। परन्तु उस अन्तः चेतना की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट नहीं होता और हम स्थूल शरीर, बाहरी आकार-प्रकार से सम्मोहित होकर उसी को वास्तविक मान लेते हैं।

हम यह भी जानते हैं कि सबसे अधिक शक्ति सूक्ष्म में है स्थूल में नहीं। जब एक मनुष्य भारी वजन उठाता है तो उसकी पेशियाँ फूल उठती हैं

और सम्पूर्ण शरीर पर परिश्रम के विशेष परिलक्षित होने लगते हैं, हम समझते हैं कि पेशियाँ बहुत शक्तिशाली हैं, परन्तु वास्तव में जो पेशियों को शक्ति देती हैं, वे तो धागे के समान पतली नाड़ियाँ (nerves) हैं, जिस क्षण इन तन्तुओं में से एक का भी सम्बन्ध पेशियों से टूट जाता है उसी क्षण ये पेशियाँ बेकार हो जाती हैं, ये छोटी-छोटी नाड़ियाँ किसी अन्य वस्तु से शक्ति ग्रहण करती हैं और वह शुद्धतर वस्तु फिर अपने से भी अधिक सूक्ष्म विचारों से शक्ति ग्रहण करती है, इसी प्रकार यह क्रम चलता रहता है, स्थूल में होने वाली गति हम देख सकते हैं, परन्तु सूक्ष्म में होने वाली गति का आभास हम अन्तर्ज्ञान या अन्तर्दृष्टि के द्वारा ही करने में समर्थ होते हैं।

बाह्य दृष्टि या स्थूल दृष्टि ईश्वर द्वारा रचित अनेकों प्राणियों में है किन्तु अन्तर्दृष्टि या अन्तर्ज्ञान वह दृष्टि है जो इस रहस्य का विमोचन करती है कि जगत में जो दृश्यमान है वह अन्तिम सत्य नहीं है, जैसे वृक्ष-हैं, हरे-भरे हैं, फले फूले हैं, वृक्ष का दिखाई देना कि वो हैं यह बाह्य दृष्टि है जो दृष्टिगोचर नहीं होता वह सत्य यह है कि उनमें (वृक्ष में) जीवन है, जीवन दिखता नहीं है, विभिन्न माध्यमों से प्रकट होता है।

इसी प्रकार एक दूसरा उदाहरण प्रकाश का है, किसी ने प्रकाश को देखा है? प्रकाश के स्रोत को किसने देखा है? हमने तो केवल प्रकाशित संसार को देखा है, प्रकाशित वस्तुएं देखी हैं और उसी को प्रकाश मानते हैं।

उपर्युक्त दोनों उदाहरणों से स्वतः यह सिद्ध होता है कि जो दृश्यमान है वह ही सत्य हो यह आवश्यक नहीं अपितु जो नहीं दिखता सत्य का कारण उसमें समाहित है।

संसार में बहुत कम पुरुष हैं जिन्होंने सत्य को पहचाना है। उनके अनुसार सत्य वह है जो उद्घाटित नहीं किया जा सकता, वह रहस्यमय है, अज्ञात है, अदृश्य है, उसका केवल अनुभव किया जा सकता है, महान दार्शनिक सुकरात को जब जहर दिया गया तो मृत्यु के अन्तिम क्षण तक उन्होंने स्वयं को शरीर से अलग रखकर देखा, संसार ने देखा सुकरात की मृत्यु और सुकरात ने देखा शरीर की मृत्यु, सुकरात ने कहा कि "मुझे अनुभव हो रहा है कि मैं नहीं मर रहा हूँ मेरा शरीर नष्ट हो रहा है।

इसी प्रकार बौद्ध रचनाओं में महाकाश्यप का नाम आता है। गौतम बुद्ध एक दिन एक सकेद कमल का फूल लेकर आए और उसे शिष्यों के सम्मुख रखकर शान्त बैठ गए, शिष्य, भिक्षु, श्रावकगण प्रतीक्षा करते रहे गौतम बुद्ध के सम्भाषण का, परन्तु बुद्ध मौन ही रहे और पुष्प को निहारते रहे, अचानक उनका शिष्य महाकश्यप हँसने लगे, उन्हें किसी ने कभी हँसते हुए नहीं देखा था, उनकी हँसी सन्नाटे में गूँजने लगी, बुद्ध ने उन्हें देखा और महाकश्यप को बुलाकर उस कमल के पुष्प को प्रदान किया, और शिष्य, भिक्षु तथा श्रावक गणों की ओर उन्मुख होते हुए कहा कि "जो मैं आप सबको बताना चाहता था वह मैं अब तक वाणी के माध्यम से आपके सम्मुख व्यक्त करता आया हूँ और जो केवल अनुभव या अर्न्तज्ञान द्वारा प्राप्त किया जा सकता है उसे मैं महाकाश्यप को देता हूँ।" यह ज्ञान था परम सत्य का, महाकश्यप उपस्थित समूह की चित्त प्रज्ञा को देखकर हँसा जो दृश्य या प्रत्यक्ष ज्ञान ज्ञान (बुद्ध द्वारा) की प्रतीक्षा कर रहे थे, परन्तु बुद्ध तो उस ज्ञान को देने के लिए आतुर थे जिसे अनुभव द्वारा प्राप्त किया जा सकता है, दोनों में गुणात्मक भेद है, जो दृश्य है वह सदा सत्य नहीं होता क्योंकि वह केवल परिणाम होता है ऐसी

प्रक्रिया का जो केवल अनुभव की जा सकती है कमल भारत में दिव्यता का प्रतीक है; उसकी उन्मीलित होती पंखुड़ियाँ आत्मा के उन्मीलन का संकेत देती हैं। कीचड़ में उत्पन्न होने पर भी उसके विशुद्ध सौन्दर्य का विकास आध्यात्मिक सम्भावना को परिलक्षित करता है। महाकश्यप के गौतम बुद्ध द्वारा दिए गए पुष्प (कमल के फूल) में निहित अर्थ को समझने में समर्थ थे। क्योंकि सत्य का ज्ञान महाकश्यप के मस्तिष्क न रहकर सम्पूर्ण अस्तित्व में समा गया था।

आज की स्थिति में जीवन या तो शक्ति विहीन है अथवा अपनी संचित शक्ति का दुरुपयोग करने की दिशा में अग्रसर है, इतना ही नहीं जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में भ्रम, भुलावे, भटकाव की स्थिति बनी हुई है, परिस्थिति व मनःस्थिति में गहन असामन्जस्य की स्थिति बनी हुई है। जो परिस्थितिवश सामने है, मन उससे असन्तुष्ट है उसे या तो कुछ अतिरिक्त चाहिए अथवा फिर मांग किसी अन्य की है, इस बाह्य जगत और अन्तः जगत के असामन्जस्य ने जीवन को निराशा, हताशा और अवसाद से ग्रसित कर दिया है।

जीवन की इन विसंगतियों से उत्पन्न समस्याओं का समाधान है जीवन के रहस्यों से सुपरिचित होना इसके लिए आवश्यक है सही समझ, सही सोच, सम्यक दिशा बोध, इसके लिए जो मार्ग है, वह है <u>अन्तः प्रज्ञा की खोज</u> अर्थात परम सत्य के दर्शन।

अन्तः प्रज्ञा ही जीवन पथ का प्रकाश है, इसी के द्वारा आन्तरिक जगत या सूक्ष्म जगत के रहस्यों का उद्घाटन होता है, इसी से व्यक्ति को अपने व्यक्तित्व का बोध होता है, उसे अपनी क्षमताओं का ज्ञान हो पाता है।

अन्तः प्रज्ञा की खोज <u>अनुभव</u> करना सीखाते हैं और अनुभव के अनुरूप ही मनुष्य को ज्ञान का बोध हो पाता है।

अन्तः प्रज्ञा की खोज या अन्तः यात्रा के माध्यम से व्यक्ति चेतना काल के अविभाजित या अखंड स्वरूप का साक्षात्कार करने में समर्थ होता है, इस यात्रा में व्यक्ति के वर्तमान जीवन के साथ उसके पीछले जीवन

भी है, जिनके अनुभवों को वह अपने चित्त में सहेजे समेटे एवं संजोए रखता है।

अन्तः प्रज्ञा खोज के माध्यम से व्यक्ति वर्तमान के साथ अतीत व भविष्य को भी समान रूप से देख सकता है, जान सकता है और अनुभव कर सकता है।

अन्तः प्रज्ञा खोज के द्वारा व्यक्ति को अन्तः चेतना का ज्ञान होता है। वह इसकी सूक्ष्म परतों को जानने, समझने व अनुभव करने में समर्थ होता है वह जगत को परमात्मा के हाथ के अमिट हस्ताक्षर के रूप में देखता है।

अन्तः प्रज्ञा खोज के द्वारा व्यक्ति यह समझने में समर्थ होता है कि जगत के रूप में परमेश्वर पल-पल स्वयं को अभिव्यक्त कर रहे हैं, वे अपने जीवन में इस सत्य की अनुभूति कर पाते हैं कि संसार भगवान का गीत है, उनका नृत्य है, एक-एक पत्ती, एक-एक फूल पर, एक-एक कण पर उनकी छाप है।

अन्तः प्रज्ञा खोज की प्रक्रिया द्वारा व्यक्ति यह बोधगम्य करने में समर्थ होता है कि संसार तो परमात्मा के साथ सेतु बनाने की व्यवस्था है, इन्हीं फूलों के संग, इन्हीं रंगों के साथ तो उसे भुवन की यात्रा करनी है, इन्हीं प्रकृति के पंखों पर सवार होकर तो परमात्मा की खोज में निकलना है क्योंकि <u>स्वामी विवेकानन्द</u> ने कहा है कि

"बाह्य एवं अन्तः प्रकृति को वशीभूत करके आत्मा के ब्रह्मभाव को व्यक्त करना ही जीवन का चरम लक्ष्य है।"

अंकुर चक्रवर्ती
- Ankur Chakravarty